“सोयाबीन उत्पादकता बढ़ाने के लिए जलवायु स्मार्ट प्रौद्योगिकी और पद्धतियाँ" विषय पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

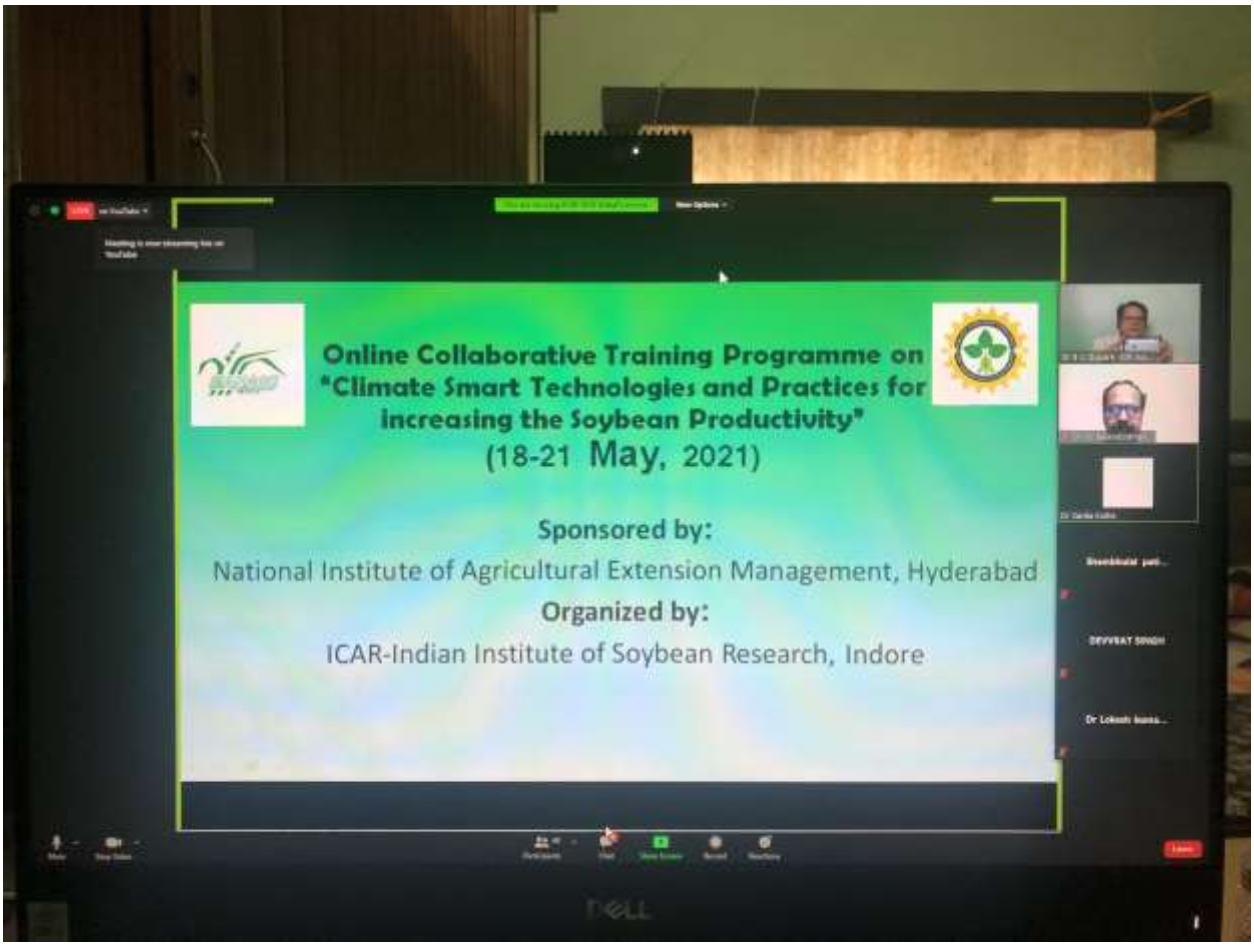

भाकृअनुप-भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान द्वारा 18-20 मई 2021 के दौरान भारत के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्यों के कृषि विभागों एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के लगभग 160 अधिकारियों और वैज्ञानिकों के लिए "सोयाबीन उत्पादकता बढ़ाने के लिए जलवायु स्मार्ट प्रौद्योगिकी और पद्धतियाँ" विषय पर एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा हैं जिसमे मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और उत्तराखंड के लगभग 160 प्रशिक्षनार्थी भाग ले रहे हैं.

कार्यक्रम के तीसरे दिन डॉ. संजीव कुमार, वैज्ञानिक (पौध रोग विज्ञान) ने सोयाबीन में आमतौर पर प्रकोप करने वाले बैक्टीरियल पस्ट्यूल, बैक्टीरियल ब्लाइट, रस्ट और पीला मोज़ेक वायरस जैसे विभिन्न रोगों के लक्षणों और नियंत्रण उपायों के बारे में बताया। उन्होंने सोयाबीन में बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के नियंत्रण के लिए रोग मुक्त बीज का उपयोग करने और 15 दिनों के अंतराल पर 0.2% की दर से कसुगामाइसिन का छिड़काव करने की सलाह दी। जबकि पीले मोज़ेक वायरस द्वारा संक्रमित रोग की रोकथाम और नियंत्रण के लिए, थियामेथोक्सम (10 मिली / किग्रा) के साथ बीज उपचार और थियामेथोक्सम 25 डब्ल्यूजी @ 100 ग्राम / हेक्टेयर का छिड़काव काफी हद तक मदद करेगा।

Dr Sanjay Singh left
Zoom
05:01
Leave
LIVE
on YouTube
Unmute
Start Video
Share Content
Participants
More

एक अन्य सत्र में डॉ. पूनम कुचलन, वरिष्ठ वैज्ञानिक (बीज प्रौद्योगिकी) ने बीज उपचार के लिए पोलिमर कोटिंग विधि के उपयोग किये जाने की अनुशंसा की जिससे विभिन्न फफूंद, शकाणु तथा विषाणु आधारित अनेक रोगों की रोकथाम की जा सकती हैं. बीज उपचार की इस प्रक्रिया में अब कम लागत वाली मशीन उपलब्ध है जो लगभग रुपये 75,000 के खर्च में औसतन छोटे गाँव के सभी किसानों की आवश्यकता की पूर्ति कर सकती है।

डॉ. पी बालासुब्रमणि, निदेशक, राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन संस्थान ने सोयाबीन आधारित प्रौद्योगिकियों के मूल्यवर्धन और प्रसंस्करण के लिए आत्मा, सूचना एवं संचार तकनीकियाँ, निजी-जन-भागीदारी जैसे विभिन्न लोकप्रिय तंत्रों का उपयोग करके जलवायु स्मार्ट प्रौद्योगिकियों के भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए ठोस प्रयासों को आमंत्रित करने के लिए आवाहन किया।

डॉ सविता कोल्हे, प्रिंसिपल साइंटिस्ट और डॉ बीयू दुपारे ने सोयाबीन से जुड़े विभिन्न हितग्राहियों के लिए भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न सोशल मीडिया टूल्स और सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन जैसे सोयाबीन ज्ञान मोबाइल ऐप, सोयाबीन कीट प्रबंधन प्रणाली, रोग निदान के लिए विशेषज्ञ प्रणाली, किसान सलाहकार प्रणाली आदि की उपयोगिता बाबत प्रस्तुतुकरण देकर सोयाबीन उत्पादन की जलवायु सहिष्णु तकनीकियों एवं पद्धतियों के प्रचार प्रसार में उपयोगिता बढ़ने हेतु सभी सम्बंधित विभागों के सामूहिक प्रयासों से कृषको की समस्याओं के निराकरण किये जाने की बात कहीं।